न्यूज एंड व्यूज
News & Views

खंड 16: सं. 2 | अर्धवार्षिकी आर एण्ड डी न्यूज बुलेटिन [केरेउअवप्रसं-बहरमपुर] | दिसंबर , 2022
Vol. 16: No. 2 | Half Yearly R&D News Bulletin [CSRTI-Berhampore] | December, 2022

संपादकीय

पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थलाकृति एवं कृषि-जलवायु विविधताओं के कारण रेशम उत्पादन अद्वितीय है। इस क्षेत्र के रेशम-किसानों की आजीविका के उत्थान के लिए केरेउअवप्रस, बहरमपुर विस्तार गतिविधियों के माध्यम से अनुसंधान व विकास, मानव संसाधन विकास एवं सहायता प्रदान करते आ रहा है। संस्थान टिकाऊ उत्पादन सुनिश्चित करने वाले किसानों के खेतों से संबंधित विभिन्न मुद्दों को हल करने का प्रयास कर रही है। ओएसटी एवं ओएफटी कार्यक्रम को परियोजना मोड में प्रौद्योगिकियों परीक्षण के कार्यान्वयन के माध्यम से मजबूत "लैब-टू-लैंड" पर जोर दिया गया। इस संस्थान ने पूर्व-कोसा रेशम कृषि पहलुओं में अनुसंधान कार्य कर रहा हैं और इस अवधि के दौरान वार्षिक कार्य योजना के अनुसार संस्थान के वैज्ञानिकों ने मुख्य अन्वेषक के रूप में ऑन गोइंग 13 परियोजनाओं मे कार्य कर रहे हैं, 2 परियोजनाओं संपन्न की गई एवं 3 नई परियोजनाएं आरंभ की गई हैं । संपन्न परियोजनाओं में, **12Y x BFC1** के प्राधिकरण परीक्षण, एक नई उत्पादक क्रॉस ब्रीड को समग्र औसत के साथ इस क्षेत्र में बहुत ही आशाजनक पाया गया। नियंत्रण कि अपेक्षा [एन × (एसके6 × एसके7)] 40.28 किग्रा प्रति 100 रोमुच जब कि 12Y x BFC1 में कोसा उपज 45.3 किग्रा दर्ज की गई। अत: 12Y x BFC1 का वाणिज्यिक लाभ उठाने के लिए केंद्रीय रेशम वोर्ड द्वारा अधिकृत किया गया है। नई परियोजनाओं में, **गुणवत्ता वाले वाणिज्यिक रेशमकीट बीज उत्पादन** में वृद्धि को संबोधित करने के लिए पश्चिम बंगाल में बीज फसल उत्पादकता में सुधार संस्थान की ओर से एक आशाजनक पहल है। अन्य संस्थानों के साथ सहयोगी के रूप में, 2 परियोजनाओ जारी है तथा 3 नई परियोजनाओं की शुरुआत के अलावा 2 परियोजनाओं को पूरा किया गया। इस अवधि के दौरान चल रही परियोजनाओं की अन्य प्रमुख अनुसंधान एवं विकास विशेषताएं हैं; शहतूत की किस्म, सी-9 ने वर्षा आधारित लाल लेटराइटिक मिट्टी (12%) एवं एनई क्षेत्र (9%) के तहत सी-2038 की तुलना में उच्च औसत मौसमी पत्ती उत्पादकता दर्ज की गई। सी-2038 के लिए अंतराल एवं पोषक तत्व की खुराक पर किए गए अध्ययन से पता चला कि उर्वरक की 120% अनुशंसित खुराक के साथ 2'×2' के अंतराल नियंत्रण पर 19.35% अधिक पत्ती उपज (14.99 टन/हेक्टेयर) दर्ज की गई (12.56 टन/हेक्टेयर)। शहतूत की किस्में, S-1635 एवं C-2038 का SNP, BAP व BAP+AA के साथ छिड़काव करने से पत्ती झड़न कम हुआ (क्रमशः 36.3%, 35.2% और 35.8%)। मुर्शिदाबाद जिले में दो चाकी कीटपालन केंद्र (सीआरसी) स्थापित किए गए, लाभार्थी को उपज 50 किग्रा/100 रोमुच जबकि गैर-लाभार्थी को 42 किग्रा, लगभग 8 किग्रा/100 रोमुच का लाभ मिला। शेल सामग्री (>19%) एवं उत्तरजीविता (>85%) के आधार पर, तीन एफसी यथा: NFC11(P) x NFC18 (P), NFC19 (D) x NFCR (D) और NFC18(M) x NFC12(M) आगे के परीक्षण के लिए संभावित मेल घटकों के रूप में पहचान की गई।

RIGHT TO INFORMATION
सूचना का अधिकार

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मुख्य संपादक: डॉ. किशोर कुमार, सी. एम. (निदेशक)
संपादक: डॉ. दीपेश पंडित (वैज्ञानिक-डी)
सहायक: श्री सुब्रत सरकार (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)
श्रीमती एस. कर्मकार (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)
श्रीमती महुआ चटर्जी (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)
हिन्दी अनुवादक: श्री चंदन कुमार साव [वरिष्ठ अनुवादक हिन्दी]

उद्यमिता विकास कार्यक्रम

केरेउअवप्रसं, बहरमपुर (WB) ने हथकरघा, हस्तशिल्प एवं रेशम उत्पादन विभाग, त्रिपुरा तथा रेशम उत्पादन विभाग, मणिपुर के समन्वय से त्रिपुरा एवं मणिपुर राज्यों के आकांक्षी जिलों में उद्यमिता विकास कार्यक्रम (EDP) का आयोजन किया। ढलाई और चंदेल क्रमशः त्रिपुरा एवं मणिपुर राज्य से दो चयनित आकांक्षी जिले थे। ईडीपी प्रशिक्षण कार्यक्रम जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT), सरकार द्वारा स्वीकृत सामाजिक विकास परियोजना के तहत आयोजित किया गया। भारत की दोनों चयनित आकांक्षी जिलों में दिनांक 03.09.2022 से 30.09.2022 तक कुल चार ईडीपी का आयोजन किया गया जिसके माध्यम से कुल 100 लाभार्थियों को उद्यमशीलता के गुणों को विकसित करने एवं उन्नत रेशम उत्पादन कृषि पर ज्ञान वर्धन हेतु प्रशिक्षित किया गया।

तकनीकी कार्यशाला

मुर्शिदाबाद और नदिया जिले के चाकी कीट पालको के लिए एक दिवसीय तकनीकी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 6 दिसंबर, 2022 को केरेउअवप्रसं-बहरमपुर के परिसर में किया गया। इसका उद्देश्य वाणिज्यिक चाकी कीट पालन की अवधारणा प्रस्तुत करना एवं किसानों को उनके क्षेत्रों में इस चाकी कीट पालन व्यवसाय को आरंभ करने के लिए बढ़ावा देना था। प्रतिभागी के तौर पर चाकी पलुपालन केंद्र के स्वामित्व, रेशम बंधु, डीओएस-अधिकारी, केवीके, नाबार्ड, लीड बैंक और संस्थान के वैज्ञानिक थे और इसमे कुल 114 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आरंभ शहतूत के पौध को जल अर्पण एवं प्रतिभागियों के स्वागत सम्बोधन से हुआ। निदेशक केरेउअवप्रसं-बहरमपुर ने सभा को संबोधित किया और चाकी कीट पालन केंद्र के मालिकों को वाणिज्यिक चाकी पलुपालन आरंभ करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस रेशमव्यवसाय को शुरू करने के लिए संस्थान से तकनीकी सहायता का आश्वासन दिया। अन्य सभी अतिथियों ने प्रतिभागियों को रेशम उद्योग की बेहतरी के लिए इस उद्यम को व्यवसाय मॉडल के रूप में अपनाने हेतु प्रेरित किया। एक तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया जिसमें वैज्ञानिकों ने चॉकी कीटपालन में नवीनतम तकनीकों एवं विकास को प्रस्तुत किया। इसके बाद चाकी कीट पालन केंद्र की और वर्तमान वाणिज्यिक चाकी पलुपालन केंद्र के स्वामित्व से विचार विमर्श हुआ। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

न्यूज एंड व्यूज
News & Views

खंड 16: सं. 2 | अर्धवार्षिकी आर एण्ड डी न्यूज बुलेटिन [केरेउअवप्रसं-बहरमपुर] | दिसंबर, 2022
Vol. 16: No. 2 | Half Yearly R&D News Bulletin [CSRTI-Berhampore] | December, 2022

EDITORIAL

Sericulture is unique in Eastern and North-Eastern region due to topography and agro-climatic variations. For the upliftment of the livelihood of seri-farmers of the region, CSR&TI, Berhampore is rendering Research, Development, HRD and service supports through extension activities. The institute is striving to solve different issues related to farmers fields ensuring sustainable production. Emphasis has been laid for a strong *"lab-to-land"* programme through implementation of trial of technologies in project mode both in OST and OFT. The institute conducts research in pre-cocoon sericulture aspects and as per the annual action plan during the period, continued 13 on-going, concluded 2 and initiated 3 new projects involving scientists from main institute as principal investigator. Among the concluded projects, authorization trials of ***12Y x BFC1,*** a new productive cross breed found very promising in the region with an overall avg. cocoon yield of 45.3 kg against control [N × (SK6 × SK7)] of 40.28 kg per 100 dfls. 12Y x BFC1 has been authorized by CSB for commercial exploitation. Among the new projects, improvement of ***Seed crop productivity*** in West Bengal for addressing augmentation of quality commercial silkworm seed production holds a promising initiative from the institute. As collaborator with other institutions, continued 02 on-going and concluded 2 projects besides initiating 3 new projects. The other major R&D highlights of ongoing projects during the period are;

Mulberry variety, C-9 recorded higher mean seasonal leaf productivity over C-2038 under rainfed red lateritic soils (12%) & NE region (9%). Study on spacing and nutrient dose for C-2038 revealed 2'×2' spacing with 120% Recommended Dose of Fertilizer recorded 19.35% higher leaf yield (14.99 t/ha) over control (12.56 t/ha). S-1635 & C-2038 sprayed with SNP, BAP & BAP+AA reduced the leaf fall (36.3%, 35.2% & 35.8 respectively).

Two chawki rearing centers (CRCs) in Murshidabad district established, observed yield 50 kg/100 dfls to the beneficiary where as 42 kg to non-beneficiary, approx. benefit 8 kg/100dfls.

Based on the shell content (>19%) and survival (>85%), three FCs namely NFC11(P) x NFC18(P), NFC19(D) x NFCR(D) and NFC18(M) x NFC12(M) were identified as potential male components for further testing.

RIGHT TO INFORMATION सूचना का अधिकार

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Chief Editor: Dr. Kishor Kumar C. M. (Director)
Editor: Dr. Dipesh Pandit (Scientist-D)
Assistance: Mr. Subrata Sarkar (Sr.TA)
Mrs. Subhra Karmakar (Sr.TA)
Mrs. Mahua Chatterjee (Sr.TA)

ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT PROG.

CSR&TI, BHP (WB) in coordination with Dept. of Handloom, Handicrafts and Sericulture, Tripura and Dept. of Sericulture, Manipur organized Entrepreneurship Development Programmes (EDP) in aspirational districts of Tripura and Manipur states. Dhalai and Chandel were the two selected aspirational districts from Tripura and Manipur state, respectively. The EDP training prog. Was organized under the societal development project sanctioned by the Dept. of Biotechnology (DBT), Govt. of India. Four number of EDPs have been organized from 03.09.2022 to 30.09.2022 in both the selected aspirational districts through which a total of 100 number of beneficiaries were trained for inculcating entrepreneurial traits and to enhance the knowledge on improved sericulture farming practices.

TECHNICAL WORKSHOP

A one-day Technical workshop for Chawki Rearers of Murshidabad and Nadia district was organized on 6th Dec., 2022, at the premises of CSR&TI, Berhampore. It was aimed to present the concept of commercial CRC and promote farmers for commencing the Seri-business in their regions. The participants of the workshop included micro-CRC owners, Resham Bandhu, DoS-officials, KVK, NABARD, Lead Bank and scientists of the Institute (114 Nos.)

Director, CSRTI-BHP addressed the gathering and encouraged the micro-CRC owners to start commercial CRCs. He assured the technical support from the institute for commencing this Seri-business. All other guests motivated the participants for taking this enterprise as a business model for the betterment of the silk industry. A technical session was organized wherein the scientists presented the latest technologies and development in chawki rearing. It was followed by an interaction of micro-CRC owners with the NABARD sponsored two Seri-Business CRC owners.

संस्थान में आयोजित हिन्दी दिवस/पखवाड़ा, 2022 की रिपोर्ट

केरेउअवप्रसं-बहरमपुर (प.बं.) में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी माह सितम्बर के दौरान अर्थात **दिनांक 01.09.2022 से 05.09.2022** तक विविध प्रतियोगिताओं यथा शब्दावली, निबंध, सुलेख व श्रुतिलेख तथा हिंदी टिप्पण व आलेखन का सफल आयोजन किया गया ताकि संस्थान के अधिकारियों/ कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेरणा व प्रोत्साहन की भावना संचारित होने के साथ ही साथ राजभाषा प्रावधानों के सम्यक कार्यान्वयन व अनुपालन में और भी गति आ सके। हिन्दी दिवस/ पखवाड़ा, 2022 के मुख्य समारोह का आयोजन **दिनांक 30.09.2022** के अपराह्न में संस्थान के बैठक कक्ष में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक महोदय डॉ. किशोर कुमार, सी. एम. द्वारा किया गया। समारोह के दौरान श्री मनोज कुमार, हिंदी शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, बहरमपुर मुख्य अतिथि के तौर पर इस समारोह में विराजमान थे।

समारोह का शुभारंभ, श्री चंदन कुमार साव, वरिष्ठ अनुवादक [हिंदी] के स्वागत अभिभाषण द्वारा किया गया। इस दौरान उपस्थित सभी पदाधिकारियों को केन्द्रीय रेशम बोर्ड की गौरवपूर्ण उपलब्धि अर्थात् वर्ष 2020-21 के लिए क्षेत्रीय पुरस्कार से सम्मानित होने की सहर्ष संसूचना और इस मुकाम तक पहुंचाने में सभी पदधारियों के सराहनीय प्रयास व योगदान के लिए बधाई दी गई। तदुपरांत, इस अवसर पर प्रबुद्ध व विशिष्ट जन अर्थात् श्री अमित साह, गृह मंत्री, राजभाषा विभाग, भारत सरकार एवं श्री राजित रंजन ओखंडियार, सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड से प्राप्त अपील/संदेश का पाठन संस्थान की डॉ. दीपिका कुमार उमेश, वैज्ञानिक-सी एवं श्री सोहन लाल साहू, अधीक्षक [प्रशा.] द्वारा किया गया। इसके अलावे, संस्थान के वरिष्ठ अनुवादक [हिंदी] द्वारा वर्ष 2021-22 की वार्षिक राजभाषा प्रगति व उपलब्धियों का विस्तृत ब्यौरा भी प्रस्तुत किया गया।

इसके अतिरिक्त, संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा संस्थान के अनुभागों को वर्ष 2021- 2022 के दौरान राजभाषा नीति तथा इसके प्रावधानों के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान हेतु संस्थान के बड़े अनुभागों में पीएमसीई प्रभाग को राजभाषा चलशील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र, प्रशिक्षण प्रभाग को राजभाषा प्रशस्ति-पत्र तथा छोटे अनुभागों में एसबीजी प्रभाग को राजभाषा चलशील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र एवं धागाकरण अनुभाग को राजभाषा प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर प्रोत्साहित व पुरस्कृत किया गया।

तत्पश्चात, संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा हिन्दी पखवाड़ा, 2022 के दौरान आयोजित कुल 04 (चार) प्रतियोगितओं के विजेता प्रतिभागियों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान करने के साथ-साथ वर्ष 2021-22 के दौरान मूल रूप से राजभाषा हिन्दी में निष्पादित सरकारी कामकाज हेतु कुल 08 अधिकारियों/पदधारियों को प्रोत्साहन स्वरूप नकद राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर उन्हें राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के प्रति प्रेरित व प्रोत्साहित किया गया।

इस अवसर पर श्री मनोज कुमार, हिंदी शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, बहरमपुर, मुख्य अतिथि द्वारा अपने अभिभाषण में यह उदगार व्यक्त किया कि हिन्दी बहुत ही समृद्ध भाषा है और हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र की अखंडता को एकसूत्र में बांधकर रख सकती है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रति संस्थान के अधिकारियों व पदधारियों की रुचि और इसके प्रचार-प्रसार के प्रति अदम्य उत्साह और निष्ठा को देख उनकी भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए आगे भी इस प्रक्रिया को जारी रखने का अपील किए।

तत्पश्चात, संस्थान के निदेशक महोदय, डॉ. किशोर कुमार, सी. एम.ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा हिंदी की वैश्विक पकड़ पर चर्चा करते हुए कहा कि यही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र की अखंडता को अक्षुण्ण रख सकती है। साथ ही, उनके द्वारा सहज, सरल और दैनांदिन की व्यावहारिक शब्दों का इस्तेमाल सरकारी कार्यों में करने की सलाह पदधारियों को देते हुए यह उदगार व्यक्त किया गया कि रेशम उद्योग से जुड़े अभिनव खोज आदि से संबंधित रिपोर्ट/उपलब्धियों का न केवल हिंदी में बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं में अर्थात् क्षेत्र से जुड़ी भाषाओं में हितधारकों तथा कृषकों तक उपलब्ध कराया जाए ताकि रेशम उद्योग की उपलब्धियों व खोजों को सहजतापूर्वक आमजन तक उपलब्ध कराने के साथ ही, राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों व उनकी दिशा-निर्देशों की सम्यक अनुपालन सुनिश्चित हो सके। साथ ही उनके द्वारा इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि हम केवल निर्धारित लक्ष्य तक सीमित न रखकर शत-प्रतिशत पत्राचार हिंदी में करने का प्रयास करें ताकि केन्द्रीय रेशम बोर्ड को यह प्राप्त सुअवसर आगे भी जारी रहे और हम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के प्रथम पैदान पर पहुंचने में सफलता हासिल कर सकें।

सर्वशेष में वरिष्ठ अनुवादक [हिंदी] द्वारा संस्थान के समस्त अधिकारियों/ पदधारियों को इस समारोह को सफल बनाने में प्रदत्त सहयोगिता व प्रतिभागिता के लिए धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह की समाप्ति की घोषणा की गई।

पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार

दिनांक 08.12.2022 को भुवनेश्वर [ओडिशा] में आयोजित "भारत के पूर्व एवं पूर्वोत्तर राज्यों के क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन" में केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर को वर्ष 2020-21 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन व अनुपालन हेतु समारोह के मुख्य अतिथि माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्र तथा संसदीय समिति के उपाध्यक्ष श्री भातृहरि मेहताब महोदय के कर-कमलों से तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

गणमान्य व्यक्तियों का दौरा

डॉ. कात्सुहिको इतो, एसोसिएट प्रोफेसर, टोक्यो कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, टोक्यो, जापान ने डीएसटी-जेएसपीएस परियोजना के तहत 5 से 16 अक्टूबर, 2022 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने परियोजना में किए जाने वाले जीनोम एडिटिंग प्रोटोकॉल एवं माइक्रोइंजेक्शन प्रयोगों पर भारतीय समकक्षों के साथ चर्चा के लिए भारत का दौरा किया। डॉ. इतो ने केंद्रीय कार्यालय, बैंगलोर तथा केरेउअवप्रस, बहरमपुर का दौरा किया। उन्होंने किसानों के प्रक्षेत्र (निशचंदपुर व र सागरपारा) का भी दौरा किया एवं भारतीय ग्रामीण परिदृश्य में कीट पालन पर अपने विचार व्यक्त किए तथा किसान की प्रचेष्टा को सराहना किए ।

केवीके कर्मचारियों के लिए टीटीपी

केरेउअवप्रसं-बहरमपुर ने क्षेरेउअके जोरहाट में दिनांक 21 से 25 नवंबर, 2022 के दौरान पांच (5) दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य केवीके-आईसीएआर के वैज्ञानिकों को रेशम उत्पादन गतिविधियों में उन्मुख करना था जो आगे प्रक्षेत्र स्तर तक विस्तारित किया जाएगा। पूर्व एवं पूर्वोत्तर भारत के केवीके के कुल दस वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभान्वित हुए हैं। इसमें व्यावहारिक तथा सैद्धांतिक दोनों सत्र शामिल थे, जिसमें वास्तविक समय के अनुभव के लिए दायर किए गए रेशम कृषि में एक दिन का एक्सपोजर दौरा शामिल था। रेशम उत्पादन की खेती के बारे में प्रतिभागियों को समग्र ज्ञान एवं कौशल प्रदान करने के लिए सुबह दो सैद्धान्तिक सत्र और दोपहर दो प्रैक्टिकल (हैंड्स ऑन ट्रेनिंग) सत्र आयोजित किए गए। रेशम उत्पादन एवं संबद्ध विषयों के क्षेत्र में आमंत्रित विशेषज्ञों ने मिट्टी से रेशम या बीज से रेशम तक रेशम उत्पादन में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए। प्री-टेस्ट और पोस्ट-टेस्ट के परिणाम (दिए गए परिणाम का सारांश) से पता चलता है कि ऐसी अवधारणाएं और विषय थे, जिनके बारे में प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण से पहले पता नहीं था और प्रशिक्षण के बाद वे विषयों के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 40वीं बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बहरमपुर (प.बं.) की 40वीं बैठक संस्थान के निदेशक महोदय, डॉ. किशोर कुमार, सी. एम. की अध्यक्षता में दिनांक 15.11.2022 को अपराह्न 3.00 बजे केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर के बैठक कक्ष में संपन्न हुई। इस बैठक में राजभाषा विभाग से पधारे श्री निर्मल कुमार दुबे, अनुसंधान अधिकारी [कार्यान्वयन] द्वारा राजभाषा प्रावधानों के सम्यक अनुपालन व कार्यान्वयन की दिशा में संस्थान तथा नराकास, बहरमपुर के सदस्य कार्यालयों का ध्यान आकृष्ट करते हुए बहुमूल्य सुझाव दिए गए ।

हिंन्दी पखवाड़ा एवं हिंन्दी दिवस; जोरहाट

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, जोरहाट में दिनांक 01.09.2022 से 14.09.2022 तक हिंदी पखवाडा का आयोजन किया गया । पखवाड़े का पहला दिन डॉ. कार्तिक नेउग, वैज्ञा-डी के अध्यक्षता में एक सामान्य बैठक आयोजन किया गया । अध्यक्ष महोदय ने सभी कर्मचारियों को प्रोत्चाहित किया तथा पखवाडा के दौरान सभी को हिंदी में सर्वाधिक कार्य संपादन करने तथा सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया । पखवाड़े के दौरान आलेखन-टिप्पण एवं हिंदी संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । केंन्द्रीय रेशम बोर्ड से ही सेवानृवित्त हिंदी अधिकारी श्री गजेन टाये मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । समारोह का शुभारंभ मंगलदीप प्रज्वलन करके किया गया । इसके पश्चात श्रीमती जुनुमनि दास, नामित हिंदी अधिकारी तथा वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने मंगलगीत प्रस्तुत किया गया। श्री गजेन टाये ने केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु के मननीय सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखोंडियार का संदेश सभी को पढकर सुनाए । इस शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि हिंदी ने हमारे पुरे देश को एकता की सूत्र से जुडकर रखा हैं और सभी कर्मचारियों को अधिक से अधिक कार्य हिंदी में सम्पादन के लिए प्रोत्साहित किया और कार्यालय में एक हिंदी पत्रिका प्रकाशन के लिए सुझाव किया गया । इस अवसर पर कार्यालय में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कित किया गया । दो कर्मचारियों को मूल रूप से हिन्दी कार्य करने पर नकद पुरस्कार प्रदान किया गया ।

FARMERS' TRAINING PROGRAMME

RSRS- Jorhat organized Farmers Skill Training Programme in two batches with 25 mulberry farmers in each batch w.e.f. 17.10.2022 to 21.10.22 (Chawki Stage) and 02.11.2022 to 07.011.2022 (Late Age Rearing). Experts from RSRS, Jorhat; SSPC, Jorhat, DoS, Jorhat and Golaghat, Jorhat, teachers & Professors from AAU, Jorhat, KVK, Jorhat imparted training to the farmers in the training programme on different aspects of mulberry plantation and silkworm rearing.

Visit of dignitaries

Dr. Katsuhiko Ito, Associate Professor, Tokyo University of Agriculture and Technology, Tokyo, Japan visited India from 5th to 16th Oct., 2022 under the DST-JSPS project. He visited India for discussion with Indian counterparts on genome editing protocol and microinjection experiments to be carried out in the project. Dr. Ito visited CO, Bangalore and CSR&TI, Berhampore. He also visited farmers field (Nishchindpur and Sagarpara) and expressed his views on the rearing in Indian village scenario and appreciated farmers efforts.

TTP for KVK Staffs

CSR&TI-Berhampore organized a five (5) days residential training programme during 21st to 25th November, 2022 at RSRS-Jorhat, Assam. The main objective of the training was to orient the Scientists of KVKs-ICAR in sericulture activities which further would be diffused in the field level. Total ten KVK's scientists across the of eastern & north-eastern India have benefitted.

The program consisted of both practical and theoretical sessions including one day exposure visit to the sericulture field for real time experience. Every day the sessions have started at 9:30 am with 15 minutes of recapping discussion of previous sessions by the co-ordinators. Two theoretical classes in pre-lunch sessions and two practical (Hands on Training) classes in post lunch sessions were conducted to provide holistic knowledge and skill to the participants about the sericulture farming. Invited experts in the field of sericulture and allied subjects have delivered the lectures on various topics in sericulture ranges from soil to silk or seed to silk.

The program was conducted successfully and all the participants took actively participated in the training. The results from the pre-test and the post-test (summary of the result given) shows that there were concepts and topics, which the trainees didn't know about before the training and after the training they could explain the topics.

कार्यशाला

क्षेत्रीय रेशम अनुसंधान केंद्र, जोरहाट ने दिनांक 14 दिसंबर, 2022 को जामुगुड़ी कार्यालय परिसर में "**पूर्वोत्तर में शहतूत रेशम उत्पादन - स्थिरता की दिशा में चुनौतियां और अवसर**" पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य शहतूत रेशम उत्पादन को किसानों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए एक उपकरण के रूप में लोकप्रिय बनाना था। शहतूत क्षेत्र में हाल ही में तकनीकी अविष्कारों को अपनाने के माध्यम से किसान, जो ज्यादातर महिलाएं एवं गरीब आदिवासी हैं, उनके आर्थिक स्तर में सुधार करना हैं। समारोह की अध्यक्षता डॉ. किशोर कुमार सी.एम., निदेशक, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर; डॉ. के.एम. विजया कुमारी, निदेशक, सीएमईआर एंड टीआई, लहदोईगढ़; डॉ. उत्पल बोरा, प्रोफेसर और डॉ. बिप्लब बोस, सहायक प्रोफेसर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी, असम; डॉ. यू.एस. सैकिया, प्रधान वैज्ञानिक, एनबीएसएस एंड एलयूपी, आईसीएआर, जोरहाट केंद्र; केरेउअवप्रसं-बहरमपुर के कुछ वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा किया गया। वैज्ञानिकों ने एनईआर के लिए उपयुक्त शहतूत के पौधों एवं रेशमकीट के सुधार तथा प्रबंधन में हाल की प्रगति, रेशमकीट बीज वृद्धि- हाल के रुझान व सार्वजनिक / निजी क्षेत्र की भूमिका, क्षमता निर्माण की भूमिका, विस्तार एवं सेवाओं, शहतूत क्षेत्र में आईटीके पर विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए। शोधकर्ताओं, योजनाकारों, अनुसंधान विद्वानों, राज्य सरकार के बीच विस्तृत चर्चा हुई। अधिकारियों एवं चयनित प्रमुख किसानों ने क्षेत्र में शहतूत रेशम उद्योग के फलने-फूलने के लिए यथार्थवादी कार्य योजना विकसित करने के लिए अपने अनुभव एवं मूल्यवान विचारों को साझा किया। असम के डारंग जिले के जोरहाट, शिवसागर, गोलाघाट और मंगलदोई क्षेत्रों के लगभग 111 किसानों तथा 21 संसाधन व्यक्तियों/ आमंत्रितों/ गणमान्य व्यक्तियों ने कार्यशाला में भाग लिया तथा अपने अनुभव एवं मूल्यवान विचारों को साझा किया।

रेशम कृषि मेला

क्षेत्रीय रेशम अनुसंधान केंद्र, जोरहाट 15 दिसंबर, 2022 को जामुगुड़ी कार्यालय परिसर में रेशम कृषि मेले का आयोजन किया। इस समारोह की अध्यक्षता डॉ. के.एम. विजया कुमारी, निदेशक, सीएमईआर एंड टीआई, लहदोईगढ़, जोरहाट मुख्य अतिथि के रूप में थे ; डॉ. यू.एस. सैकिया, प्रधान वैज्ञानिक, एनबीएसएस एंड एलयूपी, आईसीएआर, जोरहाट सम्मानित अतिथि के रूप में; डॉ. जी. श्रीनिवास, वैज्ञा –डी विशिष्ट अतिथि थे तथा इसकी अध्यक्षता डॉ. किशोर कुमार सी.एम., निदेशक, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर द्वारा किया गया। मेले में जोरहाट, शिवसागर, गोलाघाट और डारंग जिले, असम के मंगलदोई क्षेत्रों के 200 से अधिक किसानों ने भाग लिया। समारोह में डीओएस, असम के अधिकारियों; केरेउअवप्रसं-बहरमपुर, सीएमईआर एंड टीआई, लहदोईगढ़ के वैज्ञानिक; आरएसआरएस एवं एसएसपीसी, जोरहाट के सभी कर्मचारी तथा अविके, मंगलदोई के प्रभारी; असम कृषि विश्वविद्यालय के शिक्षक व छात्र, एनबीएसएस और एलयूपी, जोरहाट आदि के वैज्ञानिको ने भाग लिया। शहतूत रेशम उत्पादन पर नवीनतम विकसित तकनीकों का एक प्रदर्शनी आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि द्वरा किया गया। मेले के दौरान, एएयू, जोरहाट, आरएसआरएस, जोरहाट, सीएमईआर एंड टीआई, लहदोईगढ़ से प्रत्येक के 5 स्टॉल, जोरहाट और बोरहोला के दो उद्यमियों को शहतूत क्षेत्र की विभिन्न तकनीकों और उत्पादों का प्रदर्शन किया गया।

जागरुकता कार्यक्रम :अविके-शिलांग

अनुसंधान विस्तार केंद्र (आरईसी), शिलांग रेशम उत्पादन और बुनाई विभाग, मेघालय के साथ दिनांक 06.12.2022 को पश्चिम जयंतिया हिल्स जिले के बामथोंग गांव में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बमथोंग तथा आसपास के गांवों के 101 रेशम उत्पादन किसानों ने भाग लिया। डॉ. एन. बालचंद्रन ने केरेउअवप्रसं-बहरमपुर द्वारा शहतूत की खेती में गुणवत्तापूर्ण शहतूत के पत्तों का उत्पादन करने, कीटपालन, चाकी कीटपालन और शेल्फ कीटपालन प्रबंधन में कीटाणुशोधन एवं स्वच्छता के रखरखाव के लिए विकसित तकनीकों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया। श्री भाशाई ने खासी भाषा में बताया कि पश्चिम जयंतिया शहतूत रेशम उत्पादन करने वाला प्रमुख जिला है और रेशम उत्पादन के माध्यम से आर्थिक लाभ के लिए दो फसल करना आवश्यक है। श्रीमती फिलिस, रेशम उत्पादन प्रदर्शनकारी एवं क्षेत्र के एक प्रगतिशील किसान कोंग रिन फावा समारोह की सफल व्यवस्था में सहायक थे। रेशम कृषि से आय बढ़ाने के लिए एक वर्ष में वसंत और शरद ऋतु की फसल करने पर जोर दिया गया। अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए अनुशंसित पैकेज ऑफ प्रैक्टिस के माध्यम से शहतूत के बागानों के प्रबंधन पर जोर दिया गया ताकि गुणवत्ता वाले शहतूत के पत्तों का उत्पादन किया जा सके।

केवीके-वाहियाजर में जागरूकता कार्यक्रम

अनुसंधान विस्तार केंद्र (आरईसी), शिलांग ने डीओएस एंड डब्ल्यू, मेघालय सरकार के समन्वय से दिनांक 08.08.2022 को आईसीएआर- केवीके-वाहियाजेर वेस्ट जैंतिया हिल्स में एक जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. एन. बालचंद्रन वैज्ञा-डी, आरईसी-शिलांग एवं श्री आर. सिंजिरी, डीएसओ, पश्चिम जयंतिया हिल्स जिला और उम्मुलोंग क्षेत्र के रेशम उत्पादन निरीक्षक श्री भाशाई ने कार्यक्रम में भाग लिया। इसके अलावा, डॉ. डोडो पासवेथ, वरिष्ठ वैज्ञानिक और आईसीएआर कृषि विज्ञान केंद्र-वाहियाजेर के प्रमुख, डॉ. रिमिकी सुचियांग वर्टिनेरियन तथा विषय वस्तु विशेषज्ञ और डॉ. ए. डाइम्पेप, वैज्ञानिक, विस्तार ने भी इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में वाहियाजेर और आसपास के गांवों की लगभग 53 महिला किसानों ने भाग लिया।

डॉ. एन. बालचंद्रन ने शहतूत की खेती के पैकेज, चॉकी पालन के महत्व और कीटाणुशोधन एवं कीटपालन में स्वच्छता के रखरखाव और सफल द्विप्रज फसल के लिए उतरावस्था कीटपालन प्रबंधन प्रथाओं के बारे में बताया। श्री आर. सिंजिरी ने खासी भाषा में बताया कि पश्चिम जयंतिया शहतूत की रेशम की खेती करने वाला मुख्य जिला है और किसान दो फसल का उत्पादन करते हैं। डॉ डोडो पासवेथ ने केवीके की गतिविधियों और किसानों के लिए उपलब्ध विभिन्न योजनाओं एवं केवीके द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता के बारे में सभी को अवगत कराया। डॉ. रिमिकी सुचियांग वर्टिनेरियन ने पशुपालन विभाग से उपलब्ध सहायता पैकेज और किसानों के लाभ के लिए उपलब्ध योजनाओं की जानकारी दी। रेशम उत्पादन विभाग के पांच रेशम उत्पादन प्रदर्शकों ने समारोह में भाग लिया। एक वर्ष में रेशम उत्पादन से अपनी आय में वृद्धि करने के लिए बिना असफल हुए वसंत और शरद ऋतु की फसलों के कीटपालन पर बल दिया गया।

Workshop

RSRS, Jorhat organized a workshop on "**Mulberry Sericulture in North East – Challenges and Opportunities towards Sustainability**" at Jamuguri, Rowriah on 14th Dec., 2022. The aim of the workshop was to popularize mulberry sericulture as a tool for socio-economic upliftment of farmers, who were mostly women and poor tribals, through adoption of recent technological invention in mulberry sector.

The function was graced by Dr. Kishor Kumar C.M., Director, CSR&TI, Berhampore; Dr. K.M. Vijaya Kumari, Director, CMER&TI, Lahdoigarh; Dr. Utpal Bora, Professor & Dr. Biplob Bose, Asstt. Professor of IIT, Guwahati Dr. U.S. Saikia, Principal Scientist, NBSS&LUP, ICAR and a group of scientists of CSR&TI, Berhampore. The function was attended by scientists of NBSS&LUP, Jorhat, teachers and students from AAU etc.

Scientists deliberated lectures on different topics on Recent advances in improvement and management of mulberry plants & Silkworm suitable for NER, Silkworm Seed Augmentation- Recent trends and role of public/ private sector, Role of Capacity building, Extension and Services, ITKs in mulberry sector. Elaborate discussions were held among the researchers, planners, research scholars, state govt. officials and selected lead farmers who shared their experiences and valuable ideas in order to develop realistic plan of action for flourishing of the mulberry silk industry in the region. About 111 farmers from Jorhat, Sivasagar, Golaghat and Mangaldoi areas of Darrang district, Assam and 21 Resource Persons/ invitees/ dignitaries attended in the workshop.

Resham Krishi Mela

RSRS, Jorhat organized a RKM at Rowriah office premises on 15th Dec., 2022. The function was graced by Dr. K.M. Vijaya Kumari, Director, CMER&TI, Lahdoigarh, Assam as Chief Guest; Dr. U.S. Saikia, Pr. Scientist, NBSS&LUP, ICAR, Jorhat as Guest of Honour; Dr. G. Srinivas other scientists of CSR&TI, Berhampore and it was presided over by Dr. Kishor Kumar C.M. Director, CSR&TI, Berhampore, West Bengal. More than 200 farmers from Jorhat, Sivasagar, Golaghat and Mangaldoi areas of Darrang dt., Assam participated in the Mela. The function was attended by officials, DOS, Assam; scientists, CSR&TI, Berhampore, CMER&TI, Lahdoigarh; officials of RSRS and SSPC, Jorhat and In-charge of REC, Mangaldoi; teachers and students, AAU; scientists, NBSS&LUP, Jorhat etc. An exhibition was organized displaying about the latest technologies on mulberry sericulture for the benefit of farmers. During the Mela, five stalls each from AAU, Jorhat, RSRS, Jorhat, CMER&TI, Lahdoigarh, two entrepreneurs from Jorhat and Borhola showcasing the different technologies and products of mulberry sector.

Awareness Prog.- REC, Shillong

REC- Shillong with Dept. of Sericulture & Weaving, Meghalaya organized an awareness programme on 06.12.2022 at Bamthong village of West Jaintia Hills District. Dr. N.Balachandran Sci-D, REC-Shillong and Mr. Bhashai SI, Ummulong, Mr. Eu Lakiang, SI of RSF Ummulong attended. 101 sericulture farmers of Bamthong and nearby villages participated. Dr. N. Balachandran broadly described the details of technologies developed by CSR&TI, Berhampore in mulberry cultivation to produce quality mulberry leaves, disinfection and maintenance of hygiene in rearing, chawki rearing and shelf rearing management.

Mr. Bhashai explained in Khasi language that West Jaintia is the main district doing mulberry sericulture and the importance of taking up two crops for economic gains through sericulture. Mrs Philis, Seri Demonstrator and Kong Rin Phawa a progressive farmer of the area were helpful in successful arrangement of the function. It was emphasized to perform spring and autumn crops in a year to increase income from Sericulture. In order to achieve good crop harvests that management of mulberry plantations through recommended package of practices was stressed upon to produce quality mulberry leaves.

Awareness Prog. at KVK, Wahiajer

REC- Shillong organized an awareness Prog in co-ordination with with DoS&W, Meghalaya at the ICAR- KVK-Wahiajer West Jaintia Hills district campus on 08.08.2022. Dr.N. Balachandran Sci-D, REC-Shillong and Mr. R. Synjiri, DSO, West Jaintia Hills district and Mr. Bhashai SI of Ummulong area attended the programme. In addition, Dr. Dodo Pasweth Senior Scientist and head of the ICAR KVK-Wahiajer, Dr. Rimiki Suchiang Vertinarian and SMS and Dr. A. Dympep, Scientist Extension also graced the event About 53 women farmers of the Wahiajer and nearby villages participated.

Dr. Balachandran explained the package of practices of mulberry cultivation, importance of chawki rearing and disinfection and maintenance of hygiene in rearing and the late age rearing management practices for successful bivoltine crop harvest.

Mr. R. Synjiri explained in Khasi language that West Jaintia is the main district practising mulberry sericulture and farmers take upto two crops. Dr. Dodo Pasweth explained the activities of the KVK and various schemes and plans available for the farmers and support provided by KVK.

Dr. Rimiki Suchiang Vertinarian briefed the support packages available from the animal husbandry department and schemes available for the benefit of the farmers. Five Sericulture Demonstrators of Dept. of Sericulture attended the function. It was emphasized to rear during spring and autumn crops without fail to increase their income from Sericulture in a year.

सफलता की कहानी

नाम :	श्रीमती प्रियंका मिली
पति का नाम:	श्री संजय मिली
उम्र :	38 साल
शैक्षिक योग्यता:	स्नातक
पता:	ग्राम: बैकुण्ठपुर, खंड: जोनाई देव, जिला : धेमाज, असम; पिन कोड-791102
सम्पर्क नंबर:	6001486041

श्रीमती प्रियंका मिली का परिवार पति और दो बच्चों के साथ एक प्रगतिशील महिला शहतूत रेशमकीट पालनकर्ता है। उनका परिवार निम्न मध्य वर्गीय है और मुख्य रूप से कृषि स्रोतों पर निर्भर है। वह मूल रूप से मिसिंग (मिरी) समुदायों से हैं, साक्षर हैं, अंग्रेजी और असमिया दोनों में पढ़ने और लिखने में सक्षम हैं। वह स्वयं सहायता समूह की एक अग्रणी महिला हैं और एनजीओ समूहों के माध्यम से शहतूत एवं गैर-शहतूत रेशम उत्पादन में शामिल हैं। वह बहुत मेहनत करती है तथा उनके पास बहुत अच्छी तरह से समूहों को संभालने और नेतृत्व करने की इच्छा शक्ति है।

उचित मार्गदर्शन की कमी के कारण सफल फसलों की कटाई के बारे में आरंभ में उन्हें कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ा। ज्यादातर बार, वह सफल रेशम फसल हासिल नहीं कर पाती थी, यहाँ तक कि उसके पास सफल फसल के लिए अलग से कीटपालन गृह एवं आवश्यक उपकरण भी नहीं थे। वर्ष 2017 के बाद से अविके सिले ने उनके साथ काम किया तथा फार्म रखरखाव व रेशमकीट पालन के बारे में प्रदर्शन के माध्यम से सभी तकनीकों को लोकप्रिय बनाना आरंभ किया। अब तक, उन्होंने तीन साल के सफल व्यावसायिक फसल प्रदर्शन को पूरा किया एवं अच्छा लाभ अर्जित किया।

वर्ष	फसल / वर्ष	युग्म	रोमुच	कोसा उपज (किग्रा)	सकल आय (रु.)	कुल लाभ (रु.)
2017-18	पतझड़	SK6 x SK7	25	12.0	4,200	3,500
2018-19	वसंत	SK6 x SK7	100	54.0	18,900	16,000
	पतझड़	M6DPC x SK6-7	80	48.0	16,800	14,000
2019-20	वसंत	SK6 x SK7	100	56.0	19,600	17,500
	पतझड़	FC2 X FC1	100	53.0	18,550	16,000
		कुल =	405	223.0	78,050	67,000

श्रीमती प्रियंका अपने सहकर्मियों के साथ पारंपरिक चरखे के माध्यम से रेशम के धागे का उत्पादन करती हैं। वह रेशम के धागों का उपयोग वस्त्र बनाने और अपनी आय के लिए बाजार में बेचने में सक्षम है। उनके पति स्थानीय उत्पादों पर आधारित एक निजी कपड़ा-विक्रेता हैं। रेशम कृषि में उनके कार्यों की प्रगति अन्य किसानों को प्रोत्साहित करती है और विभागीय कर्मचारियों को प्रोत्साहित करती है। शहतुत प्ररोह पलुपालन -पोषण की रणनीति को स्थानांतरित करने के बाद उन्हें अच्छा लाभ हुआ, जहां उन्होंने अपने कामकाजी श्रमिक दिवसो को कम किया और आर्थिक लाभ बढ़ाया ।

न्यूज एवं व्यूज के लिए लेख सामग्री

निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर का यह दृढ़ संकल्प है कि आशाजनक शोध, उपलब्धियों, प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण, प्रक्षेत्र परीक्षणों, निर्देशनों, कृषक दिवस, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों पर इस अर्द्ध-वार्षिकी न्यूज बुलेटिन को नियमित रुप से प्रकाशित किया जाए। इस संस्थान तथा क्षेरेउअके, अविके तथा उप-इकाई अविके और पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारी सदस्यों से अनुरोध है कि वे प्रकाशन हेतु निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर(प.बं.) के नाम अपनी लेख समाग्रियों को भेजे।

संगोष्ठी

दिनांक 7-11 सितंबर, 2022 के दौरान क्लुज-नेपियोका, रोमानिया में अंतर्राष्ट्रीय रेशम उत्पादन आयोग द्वारा आयोजित सेरीटेक पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी मे भाग लिया

- ❑ डॉ. सुरेश के., वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. रविराज, वी.एस., वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. पूजा मकवाना, वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ श्री खसरू आलम, वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. चंद्रकांत, एन., वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. दीपिका, क्.उ., वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर

दिनांक 6 और 7 अक्टूबर, 2022 के दौरान केंद्रीय रेशम बोर्ड, बैंगलोर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "जलवायु स्मार्ट रेशम उत्पादन, 2022 - टिकाऊ रेशम उत्पादन के लिए दृष्टिकोण" पर

- ❑ डॉ. किशोर कुमार, सी.एम., निदेशक, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. श्रीनिवास, जी., वैज्ञानिक-डी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. शतदल चक्रवर्ती, वैज्ञानिक-डी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. के. नियोग, वैज्ञानिक-डी, आरएसआरएस, जोरहाट
- ❑ डॉ. रविराज, वी.एस., वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. चंद्रकांत, एन., वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. मिहिर राभा, वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. पूजा मकवाना, वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. सुरेश के., वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. परमेश्वरनायेक, जे., वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ श्री खसरू आलम, वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. थ. रंजीता देवी, वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर ने भाग लिया ।

दिनांक 28 और 29 अक्टूबर, 2022 के दौरान केतउअवप्रसं- रांची द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "वन्या रेशम उत्पादन- एक अवसर " पर

- ❑ डॉ. किशोर कुमार, सी.एम., निदेशक, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर
- ❑ डॉ. के. नियोग, वैज्ञानिक-डी, आरएसआरएस, जोरहाट, असम
- ❑ डॉ. दीप कुमार गोगोई, वैज्ञानिक-डी, आरएसआरएस, कोरापुट, ओडिशा
- ❑ श्री खसरू आलम, वैज्ञानिक-सी, निदेशक, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर ने भाग लिया।

दिनांक 26 और 27 अगस्त, 2022 के दौरान रेशम उत्पादन कॉलेज, चिंतामणि, कर्नाटक में "जलवायु लचीलापन स्थिरता और आजीविका सुरक्षा के लिए रेशम उत्पादन आधारित बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण" पर राष्ट्रीय सम्मेलन मे

- ❑ डॉ. बालचंद्रन, एन., वैज्ञानिक-डी, आरईसी, शिलांग, मेघालय
- ❑ डॉ. यल्लप्पा हरीज़ोन, वैज्ञानिक-सी, केरेउअवप्रसं-बहरमपुर ने भाग लिया।

आर एंड डी समीक्षा बैठक

- ❑55वीं आरएसी बैठक दिनांक 4 और 5 अगस्त, 2022 को आयोजित की गई
- ❑61वीं आरसी बैठक दिनांक 5 जुलाई, 2022 को आयोजित की गई
- ❑62वीं आरसी बैठक दिनांक 5 दिसंबर, 2022 को आयोजित की गई
- ❑दिनांक 6वीं दिसंबर, 2022 को चाकी कीटपालन के लिए प्रौद्योगिकी कार्यशाला का आयोजन किया गया

राष्ट्रीय रेशम दिवस

केरेउअवप्रसं-बहरमपुर ने संस्थान के सभागार में दिनांक 20 सितंबर, 2022 को रेशम दिवस मनाया। डॉ. जी. श्रीनिवास, वैज्ञानिक-डी के निर्देशन में सभी कार्मिकों द्वारा रेशम दिवस की शपथ ली गई । स्वर्गीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को केंद्रीय रेशम बोर्ड स्थापित करने के उनके दृष्टिकोण के लिए याद किया जाता है। डॉ. सुरेश द्वारा सिल्क रूट का विवरण इस अवसर पर प्रस्तुत किया गया।

प्रकाशक
डॉ. किशोर कुमार, सी. एम., निदेशक
केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
बहरमपुर – 742101, पश्चिमबंग, भारत
E-mail -csrtiber.csb@nic.in/ csrtiber@gmail.com
Website: www.csrtiber.res.in

Success Story

Name: Mrs. Priyangka Mili
Husband's Name: Shri Sanjoy Mili
Age : 38 years
Address: Village-Baikunthapur, Jonai Dev. Block, Dist.-Dhemaj Assam, Pin Code: 791102
Contact No.: 6001486041

Smt. Priyangka Mili is a progressive mulberry silkworm rearer with a small family of husband and two children. Her family belong to lower middle class and depends mainly on agriculture sources. She is originally from Missing (Miri) Communities, literate, able to read and write in both English and Assamese. She is a leading lady of Self Help Group and involved in mulberry and non-mulberry sericulture through NGO groups. She works very hard and have a power of handling and leading the Groups very nicely.

She faced some problems initially when started sericulture about harvest of successful crops due to lack of proper guidance. Most of the times, she could not achieve the successful crop performances, even she has no separate rearing house and appliances required for successful crop. Since-2017 onward REC, Sille involved with them and started to popularize all the technologies through demonstration about farm maintenance and silkworm rearing. So far, she completed three years of successful commercial crop performances and earning good returns.

Year	Crops/ year	Combin-ations	dfls	Cocoon yield (kg)	Gross income (Rs)	Net return (Rs.)
2017-18	Autumn	SK6 x SK7	25	12.0	4,200/-	3,500/-
2018-19	Spring	SK6 x SK7	100	54.0	18,900/-	16,000/-
	Autumn	M6DPC X SK6-7	80	48.0	16,800/-	14,000/-
2019-20	Spring	SK6 x SK7	100	56.0	19,600/-	17,500/-
	Autumn	FC2xFC1	100	53.0	18,550/	16,000/-
		TOTAL=	405	223.0	78,050/	67,000/-

Smt. Priyangka with her co-workers produce silk yarns through traditional charkha. She is able to utilize the Silk yarns for making garments & sell in the Market for their earnings. Her husband is a private cloth-seller based on local products. Her progress of works in sericulture encourage the other farmers and bring happiness to the departmental workers. She got good returns shifting his rearing strategy in shoot rearing then shelf rearing where she minimized their working man days and got the economical benefit.

ARTICLES FOR ***NEWS & VIEWS***

Director, CSRTI-Berhampore publishes half-yearly News Bulletin regularly on promising research findings, ToT, Field Trials, Demonstrations, Farmers' Day, Training Programmes and other important events. Officers and Staff working at main institute, RSRSs and RECs of Eastern & North Eastern states are requested to communicate articles to Director, CSRTI-Berhampore, West Bengal for publication.

Scientists participation

International seminar on **SERITECH** organized by ISC at Cluj-Napioca, Romania during 7th to 11th Sept., 2022
- ❑ Dr. Suresh K., Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Raviraj, V.S., Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Pooja Makwana, Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Mr. Khasru Alam, Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Chandrakanth, N., Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Deepika, K.U., Sci-C, CSRTI_Berhampore participated

National Seminar on "**Climate Smart Sericulture, 2022 – Approaches for Sustainable Sericulture**" organized by Central Silk Board, Bangalore during 6th & 7th Oct., 2022
- ❑ Dr. Kishor Kumar, C.M., Director, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Srinivasa, G., Sci-D, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Satadal Chakraborty, Sci-D, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. K. Neog, Sci-D, RSRS, Jorhat
- ❑ Dr. Raviraj, V.S., Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Chandrakanth, N., Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Mihir Rabha, Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Pooja Makwana, Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Suresh K., Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Mr. Khasru Alam, Sci-C, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Parameswaranaik, J., Sci-C,CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. Th. Ranjita Devi, Sci-C, CSRTI_Berhampore participated

National Symposium on "**Vanya Sericulture- An Opportunity Galore**" organized by CTR&TI, Ranchi during 28th & 29th Oct., 22
- ❑ Dr. Kishor Kumar, C.M., Director, CSRTI_Berhampore
- ❑ Dr. K. Neog, Scientist-D, RSRS, Jorhat, Assam
- ❑ Dr. Dip Kumar Gogoi, Scientist-D, RSRS, Koraput, Odisha
- ❑ Mr. Zakir Hossain, Scientist-D, RSRS, Kalimpong
- ❑ Mr. Khasru Alam, Scientist-C, Director, CSRTI_Berhampore participated.

National Conference on "**Sericulture based multi-disciplinary approaches for climate resilience sustainability and livelihood security**" at College of Sericulture, Chintamani, Karnataka during 26th to 27th Aug., 2022
- ❑ Dr. Balachandran, N., Scientist-D, REC, Shillong, Meghalaya
- ❑ Dr. Yallappa Harizon, Scientist-C, CSRTI_Berhampore

R&D Review Meeting

- ❑61st RC meeting was held during 5th July, 2022
- ❑62nd RC meeting was held during 5th Dec., 2022
- ❑55th RAC meeting was held during 4th & 5th Aug., 2022
- ❑Tech. workshop for Chawki Rearers was held on 6th Dec., 22

National Silk Day

CSRTI, Berhampore celebrated Silk Day on 20th Sept., 2022 at the Auditorium. Staff members took the Resham Diwas pledge under the direction of Dr. G.Srinivasa, Sci-D. Late Dr. Shyama Prasad Mookerjee was remembered for his vision to set up CSB. Dr. Suresh presented the trajectory of silk production.

Published By
Dr. Kishor Kumar C.M., Director
Central Sericultural Research & Training Institute
Central Silk Board, Ministry of Textiles, Govt. of India
Berhampore-742101, Murshidabad , West Bengal, India
E-mail -csrtiber.csb@nic.in/ csrtiber@gmail.com
*Website :: **www.csrtiber.res.in***